सच्ची दीपावली

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रति वर्ष दीपमाला जलाकर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी हमसे क्यों रुठ गई है। वे कौन सा दीप जलाना चाहती है? वस्तुत:आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य का अंतरतम तमसाच्छन है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है? लेकिन कैसी विडम्बना है कि आत्मदीप प्रज्ज्वलित कर कमल पुष्प सदृश्य अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी का आह्वान करने की जगह हम मिट्टी के दीप जलाकर बच्चों का खेल खेलते रहते हैं। मन मंदिर की सफाई करने की जगह बाह्य सफाई से ही खुश हो जाते हैं तभी तो लक्ष्मी हमसे रुठ गई हैं। कमल सदृश बनकर हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं।

अमावस्या की काली रात्रि की तरह आज चतुर्दिक घोर अज्ञान अंधकार छाया हुआ है। मत-मतांतर के जाल में मानव मात्र भ्रमित है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता परमात्मा शिव सर्व आत्माओं की ज्योति जगाने के लिए इस धराधाम पर अवतरित हो चुके हैं और प्राय: लोप गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। निर्विकारी बन उस सदा जागती ज्योति से अपनी आत्मा का दीपक जलाकर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं, तभी इस देव भूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की स्थापना होगी। इस युगान्तकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं। आज भी भगवान विश्वनाथ के मंदिर में अनवरत दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार परमात्मा शिव ही सदा जागती ज्योति हैं।

निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर जब हम निर्विकारी बनते हैं तो हमारा एक नया जन्म मरजीवा जन्म होता है तथा नए दैवी-स्वभाव संस्कार बनते हैं। इसी की स्मृति में व्यापारी इस दिन पुराने खाते को बंद कर नया खाता खोलते हैं। अवढर दानी,भोलानाथ भगवान शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्तव्य है कि अब वे दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें जिससे वे आगामी सतयुगी सृष्टि में श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें।

दीपावली के दिन जुआ खेलने का भी गंभीर आध्यात्मिक रहस्य है। जुए में हम कुछ सम्पति दांव पर लगाते हैं जो कई गुना होकर हमको मिलती है। इसी प्रकार सतयुगी सृष्टि के स्थापनार्थ परमपिता शिव के आदेशानुसार अपने कौडी तुल्य तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में लगा दो तो 21जन्मों के लिए कंचन काया सत्ता प्रधान मन, अखुट धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। धन्य हैं वे नर-नारी जो इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगम युग पर ऐसा ईश्वरीय जुआ खेलते हैं। स्थूल जुआ खेलने के कारण तो मनुष्यों को जेल की यातनाएं सहनी पडती हैं।

आइए, हम प्रतिज्ञा करें कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मंदिर की सफाई कर दैवी गुण सम्पन्न बनें। फिर तो इस पुण्य भूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मा–श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की स्थापना हो जाएगी जहां दुख व अशांति का नामोनिशान नहीं रहेगा। इतना महान अंतर है मिट्टी के जड दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्ज्वलित करने में, तो क्यों न इस बार हम सच्ची दीपावली मनाएं।

ब्रह्माकुमारी सरिता